मासिक

RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

वर्ष - 20 अंक - 11
(सितम्बर- 2024)
Vol - XX Issue No - XI
(September - 2024)

मूल्य: 100 /- रूपये   डाक पंजीयन क्र. मालवा डिवीजन - L2/65/RNP/399/2024-2026

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

8.0
IMPACT FACTOR

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349- 7521 , IMPACT FACTOR - 8.0

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक
अक्षर वार्ता
मूल्यः 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-20 अंक - 11, सितम्बर - 2024
Vol - XX, Issue No. XI
September - 2024
Impact Factor - 8.0

aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक
प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
कुलानुशासक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

संपादक
डॉ. मोहन बैरागी
अक्षरवार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक मंडल

प्रो. जगदीशचन्द्र शर्मा, प्राध्यापक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. राजश्री शर्मा, प्राध्यापक
माधव महाविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. डी. डी. बेदिया, विभागाध्यक्ष
पं. जवाहर लाल नेहरू व्यवसाय प्रबंध संस्थान, व आईक्यूएसी प्रभारी, विक्रम युनिवर्सिटी, उज्जैन, मप्र.
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' जनसंपर्क अधिकारी, आरजीपीवी, भोपाल, मप्र.
प्रो. उमापति दिक्षित, प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
प्रो. मोहसिन खान, विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, रायगढ़, महाराष्ट्र
डॉ. दिग्विजय शर्मा, सहायक प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
डॉ. भेरूलाल मालवीय, सहायक प्राध्यापक
शा. नवीन महाविद्यालय, शाजापुर, मप्र.
डॉ. उपेन्द्र भार्गव, सहायक प्राध्यापक
महर्षि पाणिनि विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
डॉ. रूपाली सारये, सहा.प्राध्यापक
भाषा विभाग, देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना, एसो. प्रोफेसर,
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम वि.वि, इंदौर, मप्र.
डॉ. पराक्रम सिंह, के.हि.सं., दिल्ली

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), डॉ. तुलसीदास परौहा, महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

सह संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), डॉ. रत्ना कुशवाह, (अंडमान निकोबाद), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र. से शोध, प्रकाशन, सेमीनार, संगोष्ठी, अवार्ड आदि के लिए अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एवं संस्था कृष्ण बसंती शैक्षणिक एवं सामाजिक जनकल्याण समिति, उज्जैन, मप्र. एम ओ यू हस्ताक्षरित।

नोट :- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।

Peer Review Board/Committee

1. Dr. Shalini Gupta, Asasistant Professor,ovt. Ganesh Shankar Vidyarthi College,Mungaoli,Ashoknagar ,MP
2. Dr. Jaseedha K., Associate Professor, Keral University, Kerala
3. Dr. B. Nanda Jagrit, Govt. Collage, Rajnandgaon, C.G.
4. Vandana Singh Yadav, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand
5. Dr. Mukesh Chandra Dwivedi, Principal, RSGU PG College Pukhrayan Kanpur Dehat, 209111
6. Dr. Sandip Gorakh Salve, Assistant Professor, MSS College, ambad, Jalna, Maharashtra
7. Dr. PRABHA CHOUDHARY,Jawahar Inter College, Rardhana, Meerut
8. Dr. APARNA U NAIR,St. XAVIER'S COLLEGE VAIKOM, KOTHAVARA, KOTTAYAM
9. Dr. Bhawna shrivas,Govt geetanjali girls p g College Bhopal Madhya Pradesh
10. Dr. Neelakshi Joshi, Professor, LSM Campur, Pithou\ragardh, Uttarakhand
11. Dr. Omprakash Prajapati, Assistant Professor, Himachal Pradesh Kendriya University, Kangda, H.P.
12. Dr Radhika Devi,A.K.P (P.G) COLLEGE KHURJA BULANDSHAHR
13. Rashmi pandey,Atal bihari vajpayee University bilaspur Chhattisgarh
14. Dr. Preeti Vajappe, Associate Professor, Govt. Degree Collage, Sitapur, U.P.
15. Dr. Mithlesh Kumari, Associate Professor, K.A. PG Collage, Kasganj, U.P
16. Dr. Archana Singh, Professor, Arya Kanya Degree College, Pragraj, U.P.
17. Dr. Renu rajesh, Professor, Govt. Nehru PG College, Ashoknagar, M.P.
18. Dr. Kiran Baderiya, Assistant Professor, Govt. Madhav College, Ujjain, M.P.
19. Dr. C.P. Raju, HOD, St. Aloysius College, Elthuruth, Trissur, Kerala
20. Dr. Ramdeen Tyagi, Producer, MCRPV, Bhopal
21. Dr. Shashikala Yadav, Yogacharya, yogacharya, Dewas, M.P.
22. Rajan Kumar Chaturvedi, Umaria, U.P.
23. Dr. Ambika Prasad Pandey, Assistant Professor, Thakur Harnarayan SIngh college, Prayagraj, U.P.
24. Dr. Anju Sihare, Asst. Professor, Govt. Collage, Pichor, shivpuri, M.P.
25. Dr. Atul Gupta, Asst. Professor, Govt. Collage, Ashoknagar, M.P.
26. Dr. Sultana Parveen, Assistant Professor, M.K. College, Panki, Jharkhand

---

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (**Kruti Dev 010**) या युनिकोड मंगल फॉंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (**Times New Roman**) ,एरियल फॉंट (**Arial**) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. **Please Follow- APA/MLA Style for formatting** अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है।

बैंक विवरण निम्नानुसार है-

Union Bank of India,

Account Holder-	**Aksharwarta**
Current A/c. No-	**510101003522430**
IFSC-	**UBIN0907626**
Branch-	**Rishi Nagar, Ujjain, MP, India**

UPI
Phone Pay,
Google Pay
PayTM, BHIM
9424014366

गुगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम आदि युपीआई से भुगतान के लिए मोबाईल नं. 9424014366 का अथवा स्केनर का उपयोग करें तथा भुगतान की मूल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता

43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत, मोबा :-8989547427 Email: aksharwartajournal@gmail.com

» हिन्दी के प्रमुख उपन्यासों में नेत्रहीन पात्र
सुनील कुमार, डॉ. दिलीप राम 07
» भारतीय संगीत की गुरू शिष्य परंपरा एवं महाविद्यालयीन शिक्षण पद्धति
श्रीमती नीरजा वाघ, डॉ. साधना शिलेदार 13
» लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. मोहम्मद हबीब 16
» ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी संवेदना
सिम्पल कुमारी 18
» अंबेडकरवादी अवधारणा
डॉ. श्रद्धा हिरकने, प्रो. (डॉ.) के. पी. यादव 21
» अनुवाद व्युत्पत्ति, स्वरूप एवं वर्गीकरण की अवधारणा
डॉ. आरती पाठक 23
» ग्रामीण सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक बुनियादी ढांचें का अध्ययन
सपना चौधरी, डॉ. हेना तब्बसुम 26
» रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ
सुषमा चौहान, प्रो. युवराज सिंह 29
» प्रेमचंद का दलित चिंतन (संदर्भ : सद्गति और मंदिर कहानी)
प्रियंका शाह 32
» मुक्तिबोध के काव्य में जनवादी स्वरूप
प्रवीन कुमार 36
» पण्डित अक्षयचन्द्र शर्मा द्वारा रचित निबन्ध : राजस्थानी साहित्य का मूल स्वर
पूज़ा राठौड़, प्रो. शालिनी मूलचन्दानी 39
» कबीर के काव्य में प्रगतिशील चेतना
डॉ. पंडित बन्ने 41
» आधुनिक भारत की आधारशिला रखने में महात्मा ज्योतिबा फुले का योगदान
डॉ. अमृतंजय कुमार 43
» "उत्तर-भारत में निवासरत आदिम जनजातियों के जीवन तथा उनके धार्मिक आचार-विचारों का विश्लेषण"
डॉ. विनोद यादव 46
» ग्राम्य जीवन को चित्रित करते मालवी के लोकगीत (मालवी लोक साहित्य के संदर्भ में)
बद्रीलाल डाबी, डॉ. गुलाबसिंह डावर 51
» "मालवी लोकगीतों में श्रृंगार भावना : संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में"
विजयकुमार, डॉ. पी. एस. परमार 53
» 'वाशिंदा@तीसरी दुनिया' में भूमंडलीकरण एवं सामाजिक यथार्थ
डॉ. सुनीता यादव, धर्मेन्द्र कुमार 55
» भारतीय चलचित्र में वाद्य संगीत की परम्परा और संगीत वादकों का योगदान
डॉ. सीमा जौहरी 58
» सूर सागर में राम-सीता की प्रेमाभिव्यक्ति
डॉ. मिथलेश कुमारी 61
» विद्यापति की पदावली में श्रृंगार वर्णन का स्वरूप
डॉ. रोशनी 64
» निमाड़ का नरवत पर्व
श्रीमती अंजु खेड़े 68
» भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वामी विवेकानंद के विचारों का समावेश
डॉ. मुनीश कुमार पाण्डेय 71
» केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल बनाम अर्धसैनिक बल : भारतीय संदर्भ का परिभाषात्मक विवेचन
बिजेन्द्र, प्रो. अनु रस्तोगी 74
» गोपाल दास नीरज के गीतों में मानवतावाद
सुभाष कुमार, प्रो. श्रीमती डॉ. कृष्ण शर्मा 78
» झूठा सच : सांप्रदायिक दंगों में स्त्रियों की स्थिति
अनीश कुमार यादव, डॉ. चंदन कुमार 80
» हिन्दी कथा साहित्य का भारतीय सिनेमा व समाज पर प्रभाव
मोनिका प्रजापत 82
» मालती जोशी की कहानियों में चरित्र योजना
पूज़ा पासी 85
» समकालीन हिन्दी नाटक (1980 से अद्यतन) : लोक चेतना के सामाजिक संदर्भ
डॉ. ज्ञानेश पाण्डेय, प्रो. अरूण शुक्ल 87
» सुभद्रा-नागार्जुन-गद्य-साहित्य में परिवार
खुशबू कुमारी 91
» राही मासूम रज़ा और साझा भारतीय संस्कृति
डॉ. मन्जू कोगियाल 94
» दारा शिकोह द्वारा रचित साहित्य में उद्धृत धार्मिक समन्वय की अवधारणा व धर्म के आधार पर भारत का विभाजन : एक ऐतिहासिक अवलोकन
सूरज सोनी 97
» प्रेम जनमेजय का व्यंग्य साहित्य : सामाजिक संदर्भ
सीमा मकवाना 100
» कवि बच्चन जी की काव्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय
डॉ. मीनू शुक्ला 103
» दलित जीवन की दास्तां के संदर्भ में 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा का अन्वेषण
प्रज्योत पांडुरंग गावकर 106

» **हरियाणवी लोक-साहित्य के अनुवाद की आवश्यकता : पंडित लखमीचंद के विशेष संदर्भ में**
प्रिया, डॉ. निशा शर्मा 109
» **हिंदी की महिला साहित्यकारों की आत्मकथाओं में अस्मिता की तलाश**
शेख रूबीना, प्रो. वी. जगन्नाथ रेड्डी 112
» **प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी कृत 'लहरीदशकम्' में पर्यावरण**
ओम प्रकाश जाटव, डॉ. राजेश कुमार बैरवा 115
» **मुलायम सिंह यादव का भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में योगदान**
डॉ. लोकेश कुमार शर्मा 119
» **बी.एड. कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन**
प्रीति कपूर 122
» **राम कथा आधारित पंचवटी खण्डकाव्य का शिल्पगत अनुशीलन**
श्रीमती कमला बाई दीवान
(प्रो.) डॉ. अनुसुइया अग्रवाल 125
» **जयप्रकाश नारायण का भारतीय राजनीति में योगदान**
डॉ. लोकेश कुमार शर्मा 128
» **महाराजा सुहेलदेव की शौर्य एवं गौरव गाथा**
प्रशांत कुमार शुक्ला
(प्रो.) डॉ. राधेश्याम सिंह 131
» **श्रीमद् देवी भागवत पुराण में दार्शनिक तत्व**
नमिता पारीक 134
» **अँधेरे में व्यक्त मुक्तिबोध की वैचारिकी और मध्यवर्ग की राजनीतिक अवस्थिति**
डॉ. दीपक सिंह 137
» **राममनोहर लोहिया का समाजवादी व्यवस्था में योगदान**
डॉ. लोकेश कुमार शर्मा 141
» **शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्र-छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन**
प्रीति कपूर 143
» **रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में विश्वशांती की भावना**
डॉ. वाघमारे खंडूजी हानवतराव 145
» **अमरकांत के उपन्यास 'इन्ही हथियारों से' में चित्रित नारी अस्मिता का स्वर**
डॉ. राकेश कुमार यादव 148
» **Empowering India's Sports Ecosystem : The Road to Self-Reliance**
Dr. Rajesh Kumar Sharma 151
» **Primary Education in India, Background, Major Initiatives for over all Development of the Students**
Shamshad Alam
Prof. (Dr.) Jayadevpati 154

शोध आलेख प्रकाशन संबंधी नियम

शोध आलेख 2500 से 5000 शब्दों का होकर यूनिकोड मंगल अथवा कृतिदेव 10 में 12 के फॉन्ट साइज में ही भेजें। शोध आलेख एपीए एमएलए फार्मेट में होना आवश्यक होकर फुटनोट व रिफ्रेंसेस के साथ भेजना आवश्यक है। अंग्रेजी माध्यम के शोध–पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध–पत्र मौलिक होने के घोषणा–पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें।

पुस्तकों से संदर्भ देने के लिए क्रम

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम; पुस्तक का शीर्षक (इटैलिक्स में; प्रकाशक का नाम और पूरा पता (प्रकाशन का वर्ष) कोष्ठक में; पृष्ठ संख्या ....।

द्विवेदी,हजारी प्रसाद, कबीर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, चौदहवीं आवृति, 2014, पृ. 108

पत्रिकाओं के संदर्भ

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम। लेख का शीर्षक। जर्नल का शीर्षक/नाम (इटैलिक्स में)। वॉल्यूम। संस्करण (महिना, वर्ष): पृष्ठ संख्या। प्रकाशन मीडिया।

वेबसाइट के उद्धरण का प्रारूप

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम। ''पृष्ठ का शीर्षक।''

क्षेत्र शीर्षक। (साईट) प्रकाशित करने वाली कंपनी। (युआरएल) तथा सर्च डेट (अभिगमन तिथि)।

पुस्तक, पत्रिका, आवधिक, वेबसाइट आदि) के शीर्षक को इटैलिक में लिखें।

शोध आलेख के साथ प्लेगरिज़्म रिपोर्ट / स्व घोषणा पत्र (आलेख की मौलिकता व अप्रकाशित होने के संदर्भ में) अवश्य भेजें।

आलेख की वर्ड और पीडीएफ दोनों फाइल् अनिवार्य रूप से भेजें।

शोध आलेख प्रत्येक माह की 7 तारीख तक आगामी माह के अंक के लिए स्वीकार्य होंगे।

शोध आलेख का प्रकाशन रिव्यू कमेटी द्वारा अनुसंशा के आधार पर किया जावेगा।

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 8.0
Vol - XX, Issue - XI, September - 2024

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

अँधेरे में व्यक्त मुक्तिबोध की वैचारिकी और मध्यवर्ग की राजनीतिक अवस्थिति

डॉ. दीपक सिंह

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छग.

सारांश:-प्रस्तुत शोध-पत्र में 'अँधेरे में व्यक्त मुक्तिबोध की वैचारिकी और मध्यवर्ग की राजनीतिक अवस्थिति' का विश्लेषण किया गया है। मुक्तिबोध की वैचारिक निर्मिति में मार्क्सीय ज्ञान परम्परा के योगदान को रेखांकित करते हुए मार्क्स से लेकर ग्राम्शी तक के विचारों की यात्रा की गई है। यह शोध-पत्र 'अँधेरे में कविता' को समझने के लिए निराला की कविता 'राजे ने अपनी रखवाली की और प्रेमचंद के निबंध 'महाजनी सभ्यता' को पूर्व पीठिका के रूप में प्रस्तावित करता है।

बीज शब्द:-अँधेरे में, मध्यवर्ग, सर्वहारा, औद्योगिक क्रांति, पूजीवाद, आत्मसंघर्ष, राजनितिक चेतना, मार्क्सवाद, गति विज्ञान।

हिन्दी में प्रभावशाली लम्बी कविता की शुरुआत निराला से होती है। इस दृष्टि से उनकी बादल राग, सरोज स्मृति तथा राम की शक्ति पूजा को सशक्त प्रस्थान बिंदु के रूप में देखा जा सकता है। निराला से शुरू हुई हिन्दी की लम्बी कविता का सफर गजानन माधव मुक्तिबोध के यहाँ अपने उरूज पर पहुचता दिखाई पड़ता है। कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से मुक्तिबोध की लम्बी कविताएं हिन्दी साहित्य की विशेष उपलब्धि हैं। यह बात अक्सर कही जाती है कि मुक्तिबोध का मन लम्बी कविताओं में ही रमता है। यदि इसके कारणों की पड़ताल करें तो उसके पीछे दो कारण स्पष्ट रूप से रेखांकित किये जा सकते हैं- एक तो उनकी वैचारिक बनावट और दूसरा नए बनते हुए भारत के भविष्य की चिंता। 'मुक्तिबोध हमेशा एक विस्तृत विशाल कैन्वास लेता है- जो समतल नहीं होता : जो सामाजिक जीवन के 'धर्मक्षेत्र' और व्यक्ति चेतना की रंगभूमि को निरंतर जोड़ते हुए समय के कई काल-क्षणों को प्रायः एक साथ आयामित करता है। लगता है।....इतिहास के संघर्ष -एक षडयंत्र का-सा जाल फैलता-सिमटता है। और इस जाल में हम और आप, अनजाने तौर से, और अनिवार्यतः फँस गए हैं-और निकलने का रास्ता खोज रहे हैं- मगर कहीं कोई रास्ता नहीं है ङ्कऔर फिर भी पक्का विश्वास है कि रास्ता है , रास्ता है ...।'[1] मुक्तिबोध की वैचारिक बनावट में मार्क्सवाद का गहरा असर है जिसने उन्हें किसी भी विषय को देखने समझने की अंतर्राष्टीय दृष्टि प्रदान की। मुक्तिबोध की वैचारिक बनावट पर हिन्दी में पर्याप्त बहस हुई है। उन्हें मनोविश्लेषणवाद से लेकर अस्तित्ववाद तक के खांचे में बैठाने का भी प्रयास किया गया, उनकी कविताओं की तरह ङ्कतरह से व्याख्या के प्रयास हुए। 'मुक्तिबोध यह मानते हैं कि 'आत्मपक्ष और परिस्थिति-पक्ष एक ही वास्तविकता के दो अंग हैं और इन दोनों में गहरे अंतः सम्बन्ध हैं।' इस प्रकार आत्म संघर्ष का गहरा सम्बन्ध बाह्य सामाजिक संघर्ष से है, जाहिर है कि सामजिक संघर्ष में भाग लेकर ही इस आत्मसंघर्ष को निर्णायक दिशा की और उन्मुख किया जा सकता है। इसलिए मुक्तिबोध की अधिकांश कविताओं का अंत किसी हड़ताल या जन-आन्दोलन अथवा किसी जन क्रांति के आरंभ से होता है और काव्य-नायक कभी तो उस आन्दोलन या क्रांति का दृष्टा मात्र होता है, और कभी उसका प्रेरक।'[2] डॉ. रामविलास शर्मा बार-बार यह प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं कि मुक्तिबोध अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषण वाद और मार्क्सवाद में सामंजस्य बैठाना चाहते हैं जबकि ऊपर वर्णित मुक्तिबोध की कविता की निर्माण प्रक्रिया से इसकी कोई संगति नहीं बैठती। डॉ. नामवर सिंह ने कविता के नए प्रतिमान में इस नुक्ते को बहुत गम्भीरता से उठाया है और मुक्तिबोध के वक्तव्य के माध्यम से रचनाकार के दायित्व पर बात की है, 'और सच्चा लेखक जितनी बड़ी जिम्मेवारी अपने सर पर ले लेता है, स्वयं को उतना ही अधिक तुच्छ अनुभव करता है। उसे अपनी अक्षमता और आत्मसीमा का साक्षात् बोध होता रहता है। ऐसा क्यों? इसलिए कि वह अपनी अभिव्यक्ति की तुलना जी में धड़कने वाले केवल वस्तु-सत्य से ही नहीं करता, वरन अपनी स्वयं की साक्षात्कार-सामर्थ्य की तुलना उस वस्तु-सत्य की विशालता से करता है।'[3] नामवर सिंह मुक्तिबोध की कविताओं में व्यक्त आत्मसंघर्ष को इसी पीड़ा की उपज मानते हैं। यह अस्तित्ववाद के अन्दर वाले आत्मपीडन से एकदम अलग चीज है जिसका मार्क्सवाद से संगति बैठाने का कोई सवाल ही नहीं है 'कहने की आवश्यकता नहीं कि मुक्तिबोध के साहित्य का यह आत्मसंघर्ष अस्तित्ववादी आत्मपीडन से भिन्न ही नहीं, बल्कि उससे बहुत आगे बढ़कर मार्क्सवादी सिद्धांत और कर्म की सीमा में प्रवेश करते हैं। वे मार्क्सवाद के साथ रहस्यवाद के समन्वय का पर्यटन नहीं करते बल्कि मार्क्सवादी जीवन-दृष्टि के द्वारा इन दोनों की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं।'[4] दरअसल मुक्तिबोध का शिल्प बहुत बार आलोचकों को उलझा देता है और उन्हें उसमें गंभीर रहस्यवाद जैसी चीज दिखाई पड़ने लगती है। यह बिलकुल चाँद दिखाए जाते समय ऊँगली में कसने जैसा है मुक्तिबोध की कविताएं अपने शिल्प भर में रहस्य से भरी हुई हैं उनका कथ्य पानी की तरह साफ है।

मुक्तिबोध की दिलचस्पी खगोल, गणित और विज्ञान जैसे विषयों में भी पर्याप्त दिखाई पड़ती है। इस बात की तस्दीक उनकी कविताओं से की जा सकती है जहाँ बिंदु, डैस, हाईफन के साथ विज्ञान के सिद्धांत किसी न किसी रूप में आते रहते हैं। यहाँ तक कि कवि स्वयं को-

'सपने में दीखते गणित के
गुप्त अर्थवाचक विचित्र
आंकडे सरीखा
मैं अपने को दीखा...।'[5]

गणित की एक शाखा है गति विज्ञान (Dynamics) मार्क्सवाद

किसी भी चीज को समझने के लिए इसे महत्वपूर्ण मानता है शायद इसीलिए उसे गतिशील दर्शन भी कहा जाता है। मुक्तिबोध गति विज्ञान को कविता में ऐसे बरतते हैं कि उनकी कविता की एक-एक पंक्ति भविष्य कथन है। इसलिए मुक्तिबोध जब नए बनते भारत के वर्तमान और भविष्य की बात करते हैं तो उनके पास वह गहरी विश्व दृष्टि होती है जो मज्जा के भीतर छिपी हुई सच्चाई को निकाल लाती है। हमें उनकी कविता में जो पीड़ा संत्रास आदि दिखाई पड़ता है उसका असल स्रोत यहीं है। यह चीजें किसी भी समस्या को देखने के लिए एक व्यापक दृष्टि प्रदान करती हैं साथ ही यहाँ परिणति के साथ प्रक्रिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जो कवि को एक यात्रा पर लेकर निकलती है और यह यात्रा एकांगी न होकर बहुआयामी होती है जो मुक्तिबोध को लम्बी कविताओं की और लेकर जाती है।

अँधेरे में कविता मुक्तिबोध की सबसे लम्बी कविता है। इस कविता का मूल स्वर राजनीतिक है जिसमें व्यक्ति के मनोजगत के निर्माण से लेकर सामाजिक मन के निर्माण प्रक्रिया की पड़ताल की गई है। यह कविता परिणति से अधिक प्रक्रिया की कविता है जो दूर भविष्य में होने वाले परिणाम को रेखांकित करती चलती है।

सेशन?

'निस्तब्ध नगर के मध्य-रात्रि-अँधेरे में सुनसान
किसी दूर बैंड की दबी हुई क्रमागत तान-धुन,
मंद-तार उच्च-निम्न स्वर-स्वप्न,
उदास-उदास ध्वनि-तरंगें हैं गंभीर,
दीर्घ लहरियाँ!!
गैलरी में जाता हूँ, देखता हूँ रास्ता
वह कोलतार-पथ अथवा
मरी हुई खिंची हुई कोई काली जिह्वा
बिजली के द्युतिमान् दिए या
मरे हुए दाँतों का चमकदार नमूना!'[6]

लेकिन इतना ही होता तो न मुक्तिबोध बड़े कवि होते और न अँधेरे में बड़ी कविता। साम्राज्यवादी शक्तियों से संघर्ष की रूप-रेखा और कविता में उठता जन-संघर्ष और उसकी सकारात्मक परिणति ही वह चीज है जो मुक्तिबोध को बड़ा कवि बनती है। इसलिए मुक्तिबोध'विजय की उम्मीद'के कवि है। उनकी कविता राजनीतिक युद्ध लडती हुई कविता है यही उसका सबसे बड़ा सौन्दर्य है।

'युवकों में होता जाता व्यक्तित्वांतर ,
विभिन्न क्षेत्रों में कई तरह से करते हैं संगर,
मानो कि ज्वाला-पंखुरियों से घिर हुए वे सब
अग्नि के शत-दल-कोष में बैठे!!
द्रुत-वेग बहती हैं शक्तियाँ निश्चयी।'[7]

अँधेरे में कविता एकदम व्यक्तिगत धरातल से शुरू होती है जिसमें काव्य नायक के जीवन में लगातार कोई एक दस्तक देता है,यह प्रक्रिया एक के बाद एक आने वाले चार-पांच दृश्यों में चलती रहती है और उसकी परिणति होती है - अरे,

'हाँ, साँकल ही रह-रह
बजती है द्वार पर।
कोई मेरी बात मुझे बताने के लिए ही
बुलाता है—बुलाता है'[8]

लेकिन काव्य नायक जिसे अब तक मेरी न पायी गई अभियक्ति कहता है उस तक अपनी कमजोरियों के चलते पहुँच नहीं पाता जिसका कारण है-

'(यह भी तो सही है कि
कमज़ोरियों से ही लगाव है मुझको)
इसीलिए टालता हूँ उस मेरे प्रिय को
कतराता रहता।'[9]

अब यदि कविता के शरुआती दो भागों को देखें तो यह सतही तौर पर काव्य नायक का आत्मसंघर्ष दिखाई पड़ता है जो कि एक अर्थ में है भी लेकिन इसकी व्याप्ति बहुत व्यापक है। आधुनिकीकरण और औद्योगिक क्रांति पूजीवाद को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इसी प्रक्रिया में मध्यवर्ग का जन्म होता है। इसे आप उच्च और निम्न मध्यवर्ग में बांटकर भी देख सकते हैं। काव्यनायक इस समूचे मध्यवर्ग का प्रतिनिधि है। बदलाव के लिए सबसे आवश्यक होता है,अंतर्द्वंद्व और अपनी कमियों का स्वीकार। मुक्तिबोध की विशेषता है कि वे गंभीर वैचारिक विमर्श को सहजता से कविता में उतारते चले जाते हैं। पूंजीवाद ने जिस नए मध्यवर्ग को जन्म दिया है उसका उत्पादन के साधन पर कोई अधिकार नहीं है अर्थात उसकी भौतिक स्थिति 'सर्वहारा' की है। दरअसल 'सर्वहारा समाज का वह वर्ग है जो अपनी आजीविका के साधन पूर्णतया तथा केवल अपने श्रम की बिक्री से हासिल करता है,किसी पूंजी से हासिल किए गए मुनाफे से नहीं;।'[10] 'यह मध्यवर्ग सदैव पूँजी में हिस्सेदारी पाने की कोशिश में लगा रहता है तथा मानसिक रूप से उच्चवर्ग से जुडाव महसूस करता है। उदाहरण के तौर पर वकील, डाक्टर, प्रोफेसर, मैनेजर, इंजीनियर जैसे तमाम लोग। यह वर्ग अपनी कमजोरियों से ग्रस्त पूंजी के विचारों के संवाहक के रूप में सदैव कार्य करता है। आप चाहें तो इन्हें क्रांति में बहुत बड़ी बाधा के रूप में देख सकते हैं। अँधेरे में कविता के तीसरे भाग में जो प्रोसेसन का दृश्य है उसमें यह वर्ग बड़े पैमाने पर शामिल है-

बैण्ड के लोगों के चेहरे,
मिलते हैं मेरे देखे हुओं-से,
लगता है उनमें कई प्रतिष्ठित पत्रकार
इसी नगर के !!
बड़े-बड़े नाम अरे कैसे शामिल हो गए इस बैण्ड-दल में !
×××××××××××××××××××××××××
भई वाह !
उनमें कई प्रकांड आलोचक,विचारक,जगमगाते कवि-गण
मंत्री भी,उद्योगपति और विद्वान
यहाँ तक कि शहर का हत्यारा कुख्यात
डोमा जी उस्ताद।''[11]

यह तस्वीर बहुत निराशाजनक है मुक्तिबोध को इस वर्ग से कोई उम्मीद भी नहीं है। इस वर्ग की खास विशेषता है शारीरिक श्रम की जगह यह बौद्धिक श्रम करता है और इसकी उच्चवर्ग में संक्रमण की गहरी इच्छा इसे 'रक्तपायी वर्ग से नाभिनाल-बद्ध ये सब लोग'की श्रेणी में खड़ा कर देती है इतना ही नहीं इस प्रक्रिया में यह अपनी स्वतंत्र बुद्धि भी खो देता है। किराये के विचार जो पूंजीवादी संस्थाओं द्वारा उसे दिए जाते हैं उसे अपना मानने लगता है। यहाँ हम सन्दर्भ के तौर पर इतावली मार्क्सवादी एंटोनियो ग्राम्सी को याद कर सकते हैं जिन्होंने प्रसिद्ध 'हेजेमनी' का सिद्धांत प्रतिपादित किया है

"Gramsci's concept of power is based simply on the two moments of power relations-

Dominio (or coercion) and Direzione (or consensus). These two moments are essential elements, indeed the constitutive elements of a state of balance, a state of equilibrium between social forces identified as the leaders and the led. This state of balance consists of a coalition of classes constituting an organic totality within which the use of force is risky unless there emerges an organic crisis which threatens the hegemonic position and the ruling position of the leading class in the hegemonic system. Clearly, political or state rule by a hegemonic class so defined would be rule in which consensus predominates over coercion. According to Gramsci, consensus rests at the level of civil society and hence must be won there. On the other hand, coercion rests at the level of the state, more specifically at the level of "political society." Accordingly, hegemonic rule, characterized by the predominance of consensus over coercion, represents in broad terms a balance, an equilibrium between "political society" and "civil society." Needless to say, for Gramsci the state embodies "the hegemony of one social group over the whole of society exercised through so-called private organizations, such as the church, trade unions, schools, etc.,"[2] in balance with the ensemble of public (coercive) organizations such as the state, the bureaucracy, the military, the police, and the courts. Thus, state power rests in a hegemonic equilibrium with alternated moments of force and consensus but without the necessity of predominance by coercion over consensus."[12]

सत्ता जो कि पूंजीपति वर्ग के हितों की संरक्षक है वह किसी भी चीज को मनवाने के लिए दो तरीकों का सहारा लेती है, एक है डर और हिंसा तथा दूसरी चीज है आम सहमति। इस आम सहमति के लिए तमाम नागरिक संस्थाएं अस्तित्व में आती हैं जो जन्म से ही अनुकूलन का कार्य करती हैं इसलिए मध्यवर्ग जिन विचारों को ढोता है वे दरअसल उसके न होकर पूंजीपति वर्ग के होते हैं इसीलिए मुक्तिबोध कहते हैं-

'卐बौद्धिक वर्ग है क्रीतदास
किराये के विचारों का उदभास।'[13]

यहाँ से देखने पर पता चलता है कि मुक्तिबोध का काव्यनायक मध्यवर्ग से ताल्लुक तो रखता है लेकिन किराये के विचारों की जगह उसके पास यथार्थ दृष्टि है यदि इसे राजनितिक भाषा में कहें तो आंगिक बुद्धिजीवी है जो अपनी वर्गगत कमजोरियों से लड़ रहा है और डिक्लास जिसे मुक्तिबोध व्यक्तित्वांतरण कहते हैं, होना चाहता है। यह डिक्लास हुआ काव्यनायक ही उसकी अब तक न पाई गई अभिव्यक्ति है। कविता में मध्य वर्ग बहुत जगह घेरता है जिसका कारण है कि मुक्तिबोध इसके एक हिस्से को डिक्लास होकर सर्वहारा की अग्रिम पंक्ति में शामिल हुआ देखना चाहते हैं या ऐतिहासिक रूप से इसे क्रांति के लिए आवश्यक मानते हैं।

अँधेरे में कविता की राजनीति को सरलतम रूप से समझने के लिए हम निराला की कविता 'राजे ने अपनी रखवाली की' और प्रेमचंद के ऐतिहासिक लेख 'महाजनी सभ्यता' को पूर्वपीठिका के रूप में देख सकते हैं-

कितने ब्राह्मण आए
पोथियों में जनता को बाँधे हुए।
कवियों ने उसकी बहादुरी के गीत गाए,
लेखकों ने लेख लिखे,
ऐतिहासिकों ने इतिहास के पन्ने भरे,
नाट्यकलाकारों ने कितने नाटक रचे,
रंगमंच पर खेले।
जनता पर जादू चला राजे के समाज का।
लोक-नारियों के लिए रानियाँ आदर्श हुईं।
धर्म का बढ़ावा रहा धोखे से भरा हुआ।
लोहा बजा धर्म पर, सभ्यता के नाम पर।
खून की नदी बही।
आँख-कान मूँदकर जनता ने डुबकियाँ लीं।
आँख खुली-राजे ने अपनी रखवाली की।[14]

निराला जिस बात को कह रहे हैं उसी बात को मुक्तिबोध अँधेरे में ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ पूरे विस्तार के साथ दर्ज करते हैं जिसमें इस वर्ग के निर्मिति की सम्पूर्ण राजनीतिक प्रक्रिया हमारे सामने स्पष्ट हो जाती है। शासक वर्ग के विचार शासित वर्ग में कैसे पैवस्त किये जाते हैं इस सिद्धांत को ग्राम्शी अपने प्रिजन नोटबुक में बड़े ही स्पष्ट तरीके से रेखांकित करते हैं।1936 में लिखे अपने प्रसिद्ध लेख महाजनी सभ्यता में प्रेमचंद पूंजीवाद की संस्कृति की बारीक पड़ताल करते हैं। प्रेमचंद को पढने से लगता है कि वे पूंजीवाद की कार्यप्रणाली को गहराई से समझते हैं और उसकी विवेचना के लिए मार्क्सवादी दृष्टि का इस्तेमाल करते हैं-

प्रेमचंद जब कह रहे हैं कि 'मानो आज दुनिया में महाजनों का ही राज्य है तब वे मार्क्स एंगल्स की इस बात की तस्दीक कर रहे होते हैं कि पूंजीपति वर्ग ने 'आधुनिक उद्योग और विश्व बाजार की स्थापना के बाद आधुनिक प्रतिनिधिक राज्य में अनन्य रूप से अपने लिए पूर्ण राजनीतिक प्रभुत्व जीत लिया। आधुनिक राज्य का कार्यकारी मंडल पूरे पूंजीपति वर्ग के सम्मिलित हितों का प्रबंध करने वाली कमिटी के अलावा और कुछ नहीं है।'[15] इसी तरह जब वे कहते हैं कि 'अधिक दुख की बात तो यह है कि शासक वर्ग के विचार और सिद्धान्त शासित वर्ग के भीतर भी समा गये हैं, जिसका फल यह हुआ है कि हर आदमी अपने को शिकारी समझता है और उसका शिकार है समाज'।[16] तब वे ग्राम्शी के आधिपत्य के सिद्धांत की तस्दीक कर रहे होते हैं। ग्राम्शी की मृत्य सन 1937 में मुसोलिनी की जेल में होती है उनके लेखन का अधिकांश हिंसा जेल में ही लिखा गया। वैसे प्रेमचंद के बारे में एक बात साफ है कि वे देश दुनिया की हर हलचल से वाकिफ रहते थे तो संभव है कि किसी तरह वे ग्राम्शी के विचारों से परिचित हुए हों या फिर दुनिया के दो आला दिमाग एक ही समय में एक जैसा सोच रहे थे? कहना मुश्किल है मुझे अभी वह स्रोत मिल नहीं पाया है जिससे किसी निष्कर्ष पर पंहुचा जा सके। लेकिन

इतिहास की गतिकी का इस्तेमाल कर दो विचारक एक जैसे निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं यह कोई असंभव बात नहीं है। बहरहाल मुक्तिबोध की कविता अँधेरे में पर वापस आयें और इस पूरे सीन को मिलाकर उसे समझने का प्रयास करें तो कविता स्वयं प्रकाशित हो उठती है लेकिन अन्धेरे में को समझने के लिए इससे थोड़े और की आवश्यकता है। मुक्तिबोध के पास मार्क्सवाद का विशद अध्ययन तो था ही साथ ही मनोविज्ञान में भी उनकी बहुत अच्छी पकड़ थी और इसके साथ ही शिल्प के रूप में फैंटेसी का जैसा इस्तेमाल उन्होंने किया है वह कठोर से कठोर सच्चाई को सहजता से अभिव्यक्त कर जाती है। मुक्तिबोध की कविताओं के पास जाने पर सबसे पहले उनके शिल्प से टकराना पड़ता है यदि पाठक या आलोचक शिल्प में फँस कर रह गया तो कविता उसके लिए दुरूह हो उठती है। लेकिन यदि वह शिल्प को सच्चाई को उजागर करने वाले टूल के रूप में बरतता है तो कविता में प्रवेश पा जाता है। यह सच है कि मुक्तिबोध की कविताएं अपने पाठक और आलोचक के लिए योग्यता की एक शर्त निर्धारित करती हैं। वे पाठक से वैचारिक यात्रा, संघर्ष की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए अनिवार्य धैर्य की मांग करती हैं।

संदर्भ सूची :-

1. मुक्तिबोध गजानन माधव : चाँद का मुह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ, तेरहवां संस्करण-2000 पृष्ठ संख्या-21
2. सिंह नामवर : कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन-2014 पृष्ठ 237
3. सिंह नामवर : कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन-2014 पृष्ठ 243
4. सिंह नामवर : कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन-2014 पृष्ठ 243-244
5. मुक्तिबोध गजानन माधव : चाँद का मुह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ, तेरहवां संस्करण-2000 पृष्ठ संख्या-212
6. मुक्तिबोध गजानन माधव : चाँद का मुह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ, तेरहवां संस्करण-2000 पृष्ठ संख्या-262
7. वही, पृष्ठ संख्या-293
8. वही, पृष्ठ संख्या-257
9. वही, पृष्ठ संख्या-258
10. एंगेल्स फेडरिक, मार्क्स कार्ल : कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा-पत्र,अनुवादक सिन्हा रमेश ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन 2000 पृष्ठ संख्या-59
11. मुक्तिबोध गजानन माधव : चाँद का मुह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ, तेरहवां संस्करण-2000 पृष्ठ संख्या-263-64
12. Valeriano Ramos, Jr.: The Concepts of Ideology,Hegemony,and Organic Intellectuals in Gramsci's Marxism https://www.marxists.org/ history/erol/ ncm-7/tr-gramsci.htm
13. मुक्तिबोध गजानन माधव : चाँद का मुह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ, तेरहवां संस्करण-2000 पृष्ठ संख्या-291
14. संपादक-नवल,नन्द किशोर : निराला रचनावली भाग-2,राजकमल प्रकाशन 2006 पृष्ठ संख्या- 184
15. प्रेमचंद : महाजनी सभ्यता internet archive https://archive.org/details/wps-office_202306
16. वही